हर धर्म के उद्देश्यों में समानता: महाश्रमण

लाडनूं. अंबर न्यूज

आचार्य महाश्रमण ने कहा जिस व्यक्ति के मन में हिंसा व घृणा है। वह व्यक्ति धर्म से दूर है। जैन धर्म में साधु समाज के लिए नियम निर्धारित किए गए है। उन्होंने कहा कि मोक्ष नहीं होने तक हमारी आत्मा अनन्त काल तक मौजूद रहती है। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि कर्मवाद का सिद्धांत जैन धर्म ने दिया है। व्यक्ति जैसा कर्म करता है, उसे वैसे ही फल की प्राप्ती होती है। आचार्य महाश्रमण ने यह विचार रविवार को नूर फाउण्डेशन एवं जैन विश्वभारती के संयुक्त तत्वावधान में सुधर्मा सभा में आयोजित जैन-इस्लाम धर्म सम्मेलन कही। सम्मेलन का विषय अमन शांति व भाइचारे का पैगाम था। विशिष्ट अतिथि दीवान सैयद सौहलत हुसैन ग्यासुद्दीन ने कहा कि हिन्दुस्तान सूफी संतों का देश रहा है। उन्हीं की बदौलत देश में शांति व्यवस्था कायम है। जोधपुर के मुफ्ती फय्याज अहमद ने जय जिनेन्द्र शब्द का मतलब बताते हुए कहा कि इसका अर्थ स्वयं पर नियंत्रण करना व किसी को भी दुखः नहीं पहुंचाना है।

मुख्य अतिथि चेयरमैन मुस्लिम वक्फ बोर्ड व पूर्व पुलिस महानिरीक्षक लियाकत अली खान ने कहा कि भाषाओं के अलग-अलग होने के बाद हम सब एक है। इस्लाम का अर्थ ही अमन शांति है। इस अवसर पर पालिकाध्यक्ष बच्छराज नाहटा व मुख्य शहर काजी अय्यूब अशरफी ने भी विचार व्यक्त किए।

लाडनूं. सुधर्मा भवन में प्रवचन देते आचार्य महाश्रमण।